International Journal of Applied Research 2015; 1(13): 14-16

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2015; 1(13): 14-16
www.allresearchjournal.com
Received: 11-10-2015
Accepted: 14-11-2015

डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हि प्र.

Correspondence
डॉ. शिवदत्त शर्मा
पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग,
राजकीय महाविद्यालय ढलियारा
कांगडा हि प्र.

सुमित्रानन्दन पन्त के काव्य में प्रकृति–चित्रण

डॉ. शिवदत्त शर्मा

हिन्दी साहित्य में पन्त का एक अपना स्थान है। पन्त को साहित्य में प्रकृति का चितेरा कह कर सम्बोधित किया जाता है। निस्सन्देह पन्त के काव्य में जिस प्रकार प्रकृति का चित्रण हुआ है वैसा बहुत कम कवियों के काव्य में दिखाई देता है। छायावाद के अनेक कवि इस दृष्टि से उनसे न्यून ही ठहरते हैं।उन्होंने प्रकृति के अनेक मनोरम दृश्य काव्य में उकेरे हैं। प्रकृति का मानवीकरण उनकी एक और विशेषता है। प्रकृति का नारी के रूप में चित्रण कर के वे पाठकों को मन्त्रमुग्ध कर देते हैं। आधुनिक कवि नामक रचना की भूमिका मे वे स्वयं लिखते हैं – कविता करने की प्रेरणा मुझे सबसे पहले प्रकृति निरीक्षण से मिली है, जिसका श्रेय मेरी जन्मभूमि कूर्मांचल प्रदेश को है। कवि जीवन के पहले भी मुझे याद है, मैं घंटों एकान्त में बैठा प्राकृतिक दृश्यों को एकटक देखा करता था और कोई अज्ञात आकर्षण मेरे भीतर एक अत्यन्त सौंदर्य का जाल बुनकर मेरी चेतना को तन्मय कर देता था। जब कभी मैं आंखें मूंद लेता था तो वह दृश्यपट चुपचाप मेरी आंखों के सामने घूमा करता था।
पन्त ने निस्संदेह काव्य में प्रकृति चित्रण को एक नई पहचान दी है। ऐसा प्रतीत होता है कि पन्त जी की माता के देहान्त के उपरान्त पन्त प्रकृति में ही अपनी मां के स्नेह को देखने लगे। यह भी कहा जा सकता है कि मां ही ने पिता,सखा,शिक्षक,एवं प्रेमिका के रूप में प्रकृति ने पन्त को स्नेह दिया। 1 इस तथ्य को पन्त जी ने भी स्वीकार किया है–

मां से बढ कर रही धात्री,तू बचपन में मेरे हित।
धात्री कथा रूपक भर,तूने किया जनक बन पोषण।
मातृहीन बालक के सिर पर बरद हस्तधर गोपन।

डॉ प्रभाकर माचवे ने इस सन्दर्भ में लिखा है कि– पन्त जी का प्रथम विषय है–प्रकृति। गौण विषय है–मानव। मानव में भी जो प्रकृति अविकृत है, उधर ही उनकी संस्कृत आंखें देखी जा सकतीं हैं।जो विकृत है, उनकी ओर से यह सौंदर्यवादी आत्मलक्ष्यी जैसे नयन मूंद लेता था। उनके लिए प्राकृतिक सौंदर्य प्राथमिकता था–

छोड द्रुमों की मधु छाया।
तोड प्रकृति से भी माया।
बाले, तेरे बाल जाल में कैसे उलझा दूं लोचन।

पन्त जी का पहला काव्य संग्रह वीणा है। वीणा में सुन्दर प्रकृति चित्रण है। पन्त जी ने इस सन्दर्भ में कहा भी है कि–वीणा काल में मैंने प्रकृति की छोटीछोटी वस्तुओं की अपनी कल्पना की तूलिका में रंग कर काव्य की सामग्री इकट्ठी की है।वीणा में कवि प्रकृति को मां मेरी जीवन का हार, कह कर सम्बोधित करते हैं। पन्त का प्रकृति चित्रण अनोखा है श्री शान्ति प्रिय द्विवेदी ने कहा है– वीणा में प्रकृति को आलम्बन बनाकर जिस प्रकार की कोमल तथा उल्लासमयी अनुभूतियां पन्त जी ने प्रकट की हैं वैसी आधुनिक कवियों में दुर्लभ हैं। ग्रंथि जो उनका दूसरी रचना है।विरह काव्य होते हुए भी इसमें भी प्रकृति के अनेक सुन्दर दृश्य हैं। यह सत्य है कि पल्लव तक आते आते कवि का प्रकृति चित्रण उतना आकर्षक नहीं है जितना वीणा और ग्रंथि में मिलता है।पन्त का प्रकृति चित्रण बहु आयामी है,जिसका सविस्तार वर्णन इस प्रकार है।

1. प्रकृति का आलम्बन रूप में चित्रण

आलम्बन रूप में प्रकृति का वर्णन पन्त जी की कविता में अनेक स्थलों पर किया गया है। आलम्बन रूप में वर्णन करते हुए प्रकृति का वर्णन साधन रूप में नहीं अपितु साध्य रूप में किया जाता है।

आलम्बन दो प्रकार का होता है–पहला प्रकृति का स्वतंत्र और आलम्बन रूप में चित्रण । आलम्बनरूप में प्रकृति का चित्रण करते हुए प्राकृतिक पदार्थों के नाम गिनवा दिए जाते हैं। इसे ही नामपरिगणन शैली कहते हैं। आलम्बन रूप में प्रकृति का चित्रण करते हुए वर्णन में सम्प्रेषणीयता का अभाव रहता है। ग्राम्या और ग्रामश्री कविताओं में नाम परिगणन शैली के कुछ उदाहरण देखिए–

लहलह पालक,महमह धनियां
लौकी औ, सेम फली फैली ।
मखमली टमाटर हुए लाल,
मिर्चों की बडी हरी थैली।

यही नहीं, कहीं अन्यत्र कविताओं में नाम परिगणन न करके प्रकृति के संश्लिष्ट चित्र भी अंकित किए हैं। बादल,आंसू, गुंजन, परिवर्तन, तथा नौकाबिहार में प्रकृति के संश्लिष्ट चित्र देखे जा सकते हैं।

2. उद्दीपन रूप में प्रकृति–चित्रण

प्रकृति के उद्दीपनरूप में अनेक चित्रण पन्त के काव्य में उपलब्ध होते हैं। कवि जब उद्दीपन रूप मे प्रकृति का चित्रण करता है तो उस समय प्रकृति की स्वतंत्र सत्ता नहीं रहती ,तथा पाठक प्रकृति को अपनी भावनाओं के अनुरूप देखता है। प्रकृति यहां मानव की सुखदुखात्मक अनुभूतियों को उद्दीप्त करती दिखाई देती है। प्रकृति का इस प्रकार का वर्णन भी दो प्रकार का होता है। पहला– कवि प्रकृति के सुखद क्षणों में भावों को उद्दीप्त करता हुआ चित्रित करता है। दूसरी प्रकार में वियोग के क्षणों भावों को उद्दीप्त करता है।प्रसाद ने मधुस्मृति,मधुवन,गृहकाज,गुंजन,मिलन,तथा प्रथम मिलन आदि अनेक कविताओं में प्रकृति के उद्दीपन रूप का सुन्दर वर्णन किया है। गुंजन कविता का एक उदाहरण द्रष्टव्य है–

वन के विटपों की डालडाल, कोमल कलियों से लाललाल।2
फैली नव मधु की रूप ज्वाल, जलजल प्राणों की अलि उन्मन।

इसी तरह वियोग के क्षणों में प्रकृति विरही मनों को व्यथित एवं व्याकुल बना देती है। ऐसी स्थिति में कवि की कविता में कठोरता एवं निष्ठुरता दिखाई देती है। ग्रंथि,उच्छवास,आंसू,तथा परिवर्तन आदि कविताओं में पन्त ने इन वियोग के क्षणों को कविता में चित्रित किया है। एक उदाहरण देखिए–

मेरा पावस ऋतु–सा जीवन,मानव–सा उमडा अपार मन।
गहरे धुंधले,धुले सांवले मेघों से भरे नयन।

3. प्रकृति का अलंकार रूप में चित्रण

छाया वादी कवियों ने अपनी कविता में अलंकारों का खुल कर प्रयोग किया है। प्राचीन काल से ही कवियों में प्रकृति के विविध उपकरणों का प्रयोग उपमानों के रूप में करने की प्रवृत्ति रही है। पन्त भी इसका अपवाद नहीं हैं। उन्होंने भी अपनी कविता में चमत्कार पैदा करने के लिए प्रकृति के विभिन्न उपकरणों को उपमान के रूप में प्रस्तुत किया है। आंसू कविता तो उपमाओं का भण्डार है।ग्रंथि से एक उदाहरण देखिए–

इन्दु की छवि में, तिमिर के गर्भ में,अनिल की ध्वनि में, सलिल की वीचि में,
एक उत्सुकता विचरती थी,सरल सुमन की स्मिति में, लता के अधर में।
निज पलक,मेरी विकलता,साथ ही अवनिसे,उर से मृगाक्षी ने उठा,
एक पल,निज स्नेह श्यामल दृष्टि से स्निग्ध कर दी दृष्टि मेरी दीप–सी।3

पन्त जी ने परिवर्तन कविता में उपमानों का व्यापक स्तर पर प्रयोग किया है। सांगरूपक का एक दृश्य देखिए–

अहे वासुकि सहस्त्र फन,
लक्ष अलक्षित चरण तुम्हारे चिन्ह निरन्तर,
छोड रहें हैं जग के विक्षत वक्ष–स्थल पर,
शत्शत् फेनोच्छ्वसित स्फीत फूत्कार भयंकर,
घुमा रहे हैं घनाकार जगती का अम्बर,
मृत्यु तुम्हारा गरल दन्त,कुंचक–कल्पान्तर
अखिल विश्व की विवर,वक्र कुण्डल दिग्मण्डल।

इसके अतिरिक्त कवि ने उत्प्रेक्षा,अन्योक्ति,विरोधाभास,रूपक, मानवीकरण,आदि सभी अलंकारों का प्रयोग खुल कर किया है।

4. प्रकृति का संवेदनात्मक रूप में वर्णन

प्रसाद ने अपनी कविता में हर प्रकार की संवेदना को चित्रित किया है।उनका चित्रण इतना स्वाभाविक है कि पाठक को लगने लगता है कि प्रकृति उसके सुख में सुखी और उसके दुख में दुखी है।इसी को ही प्रकृति का संवेदनात्मक रूप कहा जाता है। यह दो प्रकार का है ,प्रथम में प्रकृति मानव के आनन्द तथा उल्लास में भाग लेती हुई स्वयं अनन्दित दिखाई देती है। दूसरे रूप में प्रकृति मानव के शोक,विषाद,रुदन, तथा अवसाद के क्षणों में आंसू बहाती हुई चित्रित की जाती है।पन्त ने प्रकृति के इन दोनों रूपों का सुन्दर वर्णन सजीव रूप मे वर्णन किया है।4 मिलन कविता में प्रकृति के प्रथम रूप का चित्रण हे तो परिवर्तन में शोक, विषाद आदि दूसरे रूप का चित्रण है। संसार की अविरलता देखकर वायु आंहें भर रही है,आकाश चुपचाप आंसू बहा रहा है,सागर सिसकियां भर रहा है और तारे सिहर रहे हैं। एक उदाहरण प्रस्तुत है–

खोलता इधर जन्म लोचन,मूंदती उधर मृत्यु क्षणक्षण,
अभी उत्सव औ हासहुलास,अभी अवसाद ,अश्रु,उच्छवास,
अचिरता देख जगत की आप,शून्य भरता समीर निश्वास,
डालता पातों पर चुपचाप,ओस के आंसू नीलाकाश
सिसक उठता समुद्र का मन,सिहर उठते उडुगन।5

5. वातावरण– निर्माण के रूप में प्रकृतिका वर्णन

आधुनिक कवियों में वातावरण निर्माण के लिए प्रकृति का उपयोग आम बात हो गई।पन्त ने तो बडी ही सफलता से इसका प्रयोग किया है। प्रकृति के इस रूप की भी दो प्रणालियां हैं। जहां जहां गम्भीर वातावरण की आवश्यकता होती है वहां प्रकृति के गम्भीर रूप का ही चित्रण किया जाता है और जहां कहीं सुख और उल्लास पूर्ण वातावरण की आवश्यकता होती है,वहीं प्रकृति आनन्दित और उल्लसित चित्रित की जाती है। पन्त ने इन दोनों प्रकारों का प्रचुर प्रयोग किया है। संध्याकेबाद नामक कविता में कवि ने गम्भीर वातावरण की सृष्टि की है तो ग्रंथि नामक कविता में कवि ने आनन्दमयी घटना का उल्लेख करने के लिए पहले वसन्त की मादक बेला का सुन्दर वर्णन किया है–

वह मधुर मधुमास था,जब गंध से
मुग्ध होकर झूमते थे मधुप दल,
रसिक पिक के सरस तरूण रसाल थे,
अवनि के सुख बढ रहे थे दिवस–से
जानकर ऋतुराज का नव आगमन,
अखिल कोमल कामनाएं अवनि की
खिल उठीं थीं मृदुल सुमनों में कई
सफल होने की अवनि में ईश से। 6

6. रहस्यात्मक रूप में प्रकृति–वर्णन

प्रकृति में अगोचर सत्ता को निहारने की प्रवृत्ति कवियों में है। वेदों उपनिषदों में परोक्ष सता और प्रकृति के रहस्यात्मक रूप का वर्णन मिलता है। अनेक मंत्र और ऋृचाएं इस से भरी पडीं हैं। पन्त भी दृश्यमान जगत का वर्णन करते हुए उस अदृश्य सत्ता को प्रकृति में देखने लगता है। 7 पन्त प्रकृति में उस सत्ता के स्पन्दन को महसूस करता हुआ कहता है–

एक छवि के असंख्य उड्गण,
एक ही सब में स्पन्दन।

कवि पन्त ने इसी तरह मौन निमन्त्रण और ,नौकाविहार में इसके प्रत्यक्ष उदाहरण मिलते हैं।एक उदाहरण इसे स्पष्ट कर देगा–

कनक छाया में, जब कि सकाल,खोलती कलिका उर के द्वार,
सुरभि पीडित मधुपों के बाल,तडप बन जाते हैं गुंजार,
न जाने ढुलक ओस में कौन, खींच लेता मेरे दृग मौन ।8

7. प्रकृति का मानवी करण

प्रकृति का मानवी करण छाया वादी कवियों की विशेषता हैं। इस तरह मानवीकरण से प्रकृति सचेतन प्राणी के रूप में चित्रित होती है।9 प्रकृति सचेतन प्राणी के रूप में विभिन्न क्रियाएं करती हुई दिखाई देती है। निर्गुण को साकार, अरूप को सरूप, बना कर प्रस्तुत किया जाता है। छाया, बादल,मधुकरी, निर्झरी, संध्या, नौकाविहार, चांदनी, और जुगनु आदि कविताओं में पन्त ने प्रकृति को मानवीय भावनाओं,चेष्टाओं,तथा व्यापारों से ओतप्रोत करके सचेतन की तरह प्रस्तुत किया है। संध्या में मानवीकरण का सजीव चित्रण देखिए–

कौन तुम रूपसि, कौन, व्योम से उतर रही चुपचाप
छिपी निज छाया छवि में अपार, सुनहला फैला केश कलाप।
मधुर, मंथर ,मृदु,मौन
मूंद अधरों में मधुरालाप,पलक में निमिष,पदो ंके चाप,
भाव संकुल,बंकिम,भ्रूचाप,मौन केवल तुम मौन।

कवि ने इसी तरह बादल कविता में भी बादल का अलौकिक मानवीकरण किया है।

सुरपति के हम ही हैं अनुचर
जगत्प्राण के ही सहचर
मेघदूत की सजल कल्पना
चातक के चिरजीवनधर
मुग्ध शिखी के नृत्य मनोहर
सुभग स्वाति के मुक्ताकर
विहगवर्ग के गर्भ विधायक
कृषक बालिका के जलधर।

8. उपदेशिका के रूप में प्रकृति–वर्णन

अपने आदर्श वाक्य को थोपने से अच्छा है कि प्रकृति के माध्यम से उपदेश दिया जाए । पन्त जी ने इसी विधि का अनुसरण किया है। गााता खग नामक कविता इस सर्वश्रेष्ठ उदाहरण है। इसमें कवि आशावादी बन कर आत्म चिन्तन करता हुआ प्रकृति के माध्यम से परामर्श देता प्रतीत होता है। प्रातः कालीन स्वर्णिम सुषमा भी पाठक को यही उपदेश देती है कि यह संसार का जीवन अत्यन्त सुन्दर और सुखमय है–

हंसमुख प्रसून सिखलाते, पलभर है जो हंस पाओ।
अपने उर की सौरभ से, जग का आंगन भर जाओ।।

इसी प्रकार परिवर्तन में प्रकृति का प्रयोग लोक –शिक्षा के लिए किया गया है।कवि ने बसन्त को पतझड में,सुन्दर प्रभात को संध्या में, और चांदनी को अंधकार में परिणत होते बतला कर जीवन और जगत की अस्थिरता, और क्षण–भंगुरता का उपदेश दिया है।
आज पावस–नद के उद्गार, काल के बनते चिन्ह कराल।
प्रातः का सोने का संसार, जला देती संध्या की ज्वाल।

9. दूती के रूप में प्रकृति का चित्रण

प्रकृति का दूत या दूती के रूप में चित्रण अनेक कवि करते रहे हैं। संस्कृत के कालीदास का मेघदूत दूत काव्य ही है, जिसमें मेघ अर्थात बादल को दूत बनाया गया है। इसी तरह सूरदासका भ्रमरगीत, आयोध्या सिंह उपाध्याय का प्रियप्रवास ऐसी ही रचनाएं हैं।पन्त ने भी बादल का प्रयोग दूत के रूप में किया गया है। कवि कहता है कि दमयन्ती के समान ये बादल कुमुद कला को संदेश देने के लिए सुनहरे हंस का रूप धारण कर लेते हैं और उसे प्रिय का सुन्दर सन्देश देकर दूत का कार्य सम्पन्न करते हैं–

दमयन्ती–सी कुमुद कला के
रजत करों में फिर अभिराम
स्वर्ण हंस–से हम मृदु ध्वनि कर,
कहते प्रिय संदेश ललाम।

10. प्रतीकात्मक रूप में प्रकृति–वर्णन

छायावादी एवं प्रयोगवादी कवियों ने आमतौर पर प्रतीकों के माध्यम से सुन्दर तथा मनोरम भावाभिव्यक्तियां की हैं।पन्त जी ने तो सर्वाधिक प्रतीकों का प्रयोग अपनी कविता में किया है। परिवर्तन नामक कविता में उन्होंने प्रकृति का प्रतीकात्मक रूप में पर्याप्त प्रयोग किया है। एक उदाहरण देखिए–

अभी तो मुकुट बंधा था माथ, हुए कल ही हल्दी के हाथ,
खुले भी न थे लाज के बोल, खिले भी चुम्बन शून्य कपोल,
हाय, रुक गया यहीं संसार, बना सिंदूर अंगार।
वात–हत–लतिका वह सुकुमार,पडी है छिन्नाधार। 10

इस तरह पन्त जी को प्रकृति का चितेरा कहना अक्षरशः उचित है।वे प्रकृति के अनन्य भक्त हैं। उनकी कविता में प्रकृति के विविध रूप एवं प्रयोग उन्हें सर्वश्रेष्ठ कवि प्रमाणित करते हैं इस में सन्देह नहीं।

11. सन्दर्भ सूचि–

1. राम विलास शर्मा हिन्दी के छायावादी कवि पृ56
2. सुमित्रानन्दन पन्त गुंजन
3. उपरोक्त ग्रंथि
4. डॉ रामदरश राय छायावादी काव्य भाषा में अर्थतत्व पृ76
5. सुमित्रानन्दन पन्त मिलन
6. उपरोक्त ग्रंथि
7. डॉ रामदरश राय आधुनिक हिन्दी कविता में पौराणिक सन्दर्भों की पुर्नरचनापृ157
8. सुमित्रानन्दन पन्त निमन्त्रण
9. डॉ मोहन अवस्थी हिन्दी साहित्य का अद्यतन इतिहासपृ158
10. सुमित्रानन्दन पन्त परिवर्तन